शोध संक्षिप्तिका

अध्ययन की पृष्ठभूमि –

भारत एक विकासशील राष्ट्र है। 2011 की जनगणना के अनुसार साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है अर्थात् 25.96 प्रतिशत लोग निरक्षर हैं। निरक्षरों में सर्वाधिक संख्या में दलित, महिलायें व अल्पसंख्यक हैं। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में अचानक कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं आ सकता है क्योंकि भारतीय समाज में अनेक जटिलतायें दृश्य एंव अदृश्य रूप में विद्यमान है। भारतीय समाज में वर्ण व जाति व्यवस्था वर्चस्व स्थापित करने के लिए एक प्रमुख कारक के रूप में स्मृतिकाल से ही रही है। इस व्यवस्था के कारण समाज का एक विशाल समुदाय समाज में उपलब्ध अधिकारों व संसाधनों से न केवल वंचित रहा अपितु शोषण का शिकार भी रहा है।

मध्यकाल में भारतीय समाज में व्यक्ति की स्वतंत्रता व समानता जैसे मूलभूत अधिकार समाप्त ही थे। समाज में अनेक आडंबर एवं कर्मकाण्डों का बोलबाला था। इन सामाजिक कुरीतियो को समाप्त करने हेतु भारत में नवजागरण का सूत्रपात 18 वीं शताब्दी से माना जाता है। अंग्रेजों के भारत में आने के साथ भारत का सम्पर्क वाह्य देशों से बढ़ा। इस दौरान विज्ञान एवं तकनीकी का तेजी से विकास हुआ। शिक्षा के पुनर्गठन, पाश्चात्य संस्कृति व विचार, जीवन शैली तथा मूल्यों नें भारतीय जनमानस को व्यापक रूप से प्रभावित किया। परिवर्तित सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिवेश के अनुरूप भारतीय समाज का सामंजस्य स्थापित करने के लिये प्रबुद्ध वर्ग ने प्रयास प्रारंभ किया। इस दिशा में सामाजिक सुधार कार्यक्रम संचालित करने वाले प्रमुख सुधारक राजा राम मोहन राय, देवेन्द्र नाथ टैगोर, केशव चन्द्र सेन तथा दयानन्द सरस्वती आदि थे। इन समस्त समाज सुधारको नें जातिप्रथा, कर्मकाण्ड, अस्पृश्यता आदि कुरीतियों का विरोध किया तथा शिक्षा के द्वारा तर्क संगत समाज की स्थापना पर बल दिया। इसी क्रम में अपवंचितों, दलितों, महिलाओं को समाज की मुख्य धारा से जोड़नें तथा उनके विकास हेतु महात्मा ज्योतिराव फुले द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किये गये। उन्होने हजारों वर्षो से अभिशप्त जीवन व्यतीत

करने को विवश समुदाय को शिक्षा द्वारा धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास के युग से निकालकर आधुनिक तर्क संगत युग में लाने का प्रयास किया।

अध्ययन की आवश्यकता–

किसी भी राष्ट्र के विकास व वृद्धि में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में आज भी निरक्षरता एक बहुत बड़ी समस्या हैं। स्वतंत्रता के 70 वर्षो बाद भी प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण का लक्ष्य पूरा नहीं हो सका है। ऐसी स्थिति में गुणात्मक उच्च शिक्षा की प्राप्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

स्वतंत्रता के पश्चात् सविंधान के माध्यम से स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व को बढ़ावा देने के लिये सवैंधानिक प्रयास किये गये है परंतु भारतीय जनमानस इन आदर्श मानवीय मूल्यों को मानसिक व भावात्मक रूप से आज भी पूर्वतः स्वीकार नहीं कर पा रहा है। आज भी समाज के स्वार्थी लोग शास्त्रों में वर्णित वर्ण व जाति व्यवस्था आदि को यथावत् जारी रखने के पक्षधर हैं।

भारत वर्ष की शिक्षा संस्थाओं की वर्तमान स्थितियाँ अत्यन्त खेदपूर्ण हैं उनमें आदर्शो व प्रतिमानो का हनन हो रहा है। क्षेत्र, जाति व धर्म के आधार पर पक्षपात व अन्याय आज भी शिक्षा के क्षेत्र भी प्रभावी है। ऐसी स्थिति में शिक्षा द्वारा समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव नही है। प्रो0 एम0 एन0 श्रीनिवासन के अनुसार ''शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी साधन तभी बन सकती है जब वह स्वस्थ अथवा दोषमुक्त हो।''

इन सभी स्थितियों पर किये गये विचार के आधार पर स्पष्ट है कि शिक्षा व्यवस्था में आमूल–मूल परिवर्तन की आवश्यकता है। उसे व्यक्तियों, समुदायों व समाज की आवश्यकताओं से जोड़ना होगा व समाज की नकारात्मक प्रवृत्तियों को दूर करने योग्य बनाना होगा।

महात्मा ज्योतिराव फुले ने शिक्षा व समाज सुधार को एक दूसरे का पूरक माना वे शिक्षा में गुणात्मक सुधार कर उसके प्रसार द्वारा सामाजिक भेदभाव को

समाप्त करने हेतु जीवन पर्यन्त संघर्षरत रहे। महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचार आधुनिक परिपेक्ष्य में प्रासंगिक हो सकते हैं। आज आवश्यकता है कि उनके विचारों को पुनः मूल्यांकित कर उनकी आधुनिक परिदृश्य में प्रभाविकता का पता लगाया जाये।

जीवन परिचय–

ज्योतिराव फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के खानबाड़ी नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम गोविन्द राव व माता का नाम चिमणाबाई था। माता का निधन हो जाने इनका पालन–पोषण सगुणाबाई ने किया। इनके कुल का नाम 'गोन्हे' था परन्तु पूर्वजो द्वारा फूलों की खेती व व्यवसाय से जुड़े होने के कारण कालान्तर में परिवर्तित होकर 'फुले' हो गया। ज्योतिराव का विवाह सावित्रीबाई से हुआ था।

ज्योतिराव फुले ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा एक मराठी विद्यालय से प्राप्त की। इसके पश्चात् स्कॉटिश मिशन स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। यहाँ पढ़ते हुये उन्होने विभिन्न धार्मिक मतों के बारे में गहनता से अध्ययन किया। वे टॉमस पेन की पुस्तक 'राइट्स ऑफ मैन' से अत्यधिक प्रभावित हुये।

सन् 1848 से 1852 के मध्य ज्योतिराव फुले ने 18 पाठशालाये खोली। उन्होंने 1873 में 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना की। उन्होने तत्कालीन बुराईयो पर प्रहार करने वाली अनेक कृतियों जैसे ब्रह्मणों की चालाकी (1869), गुलामगिरी (1873), किसान का कोड़ा(1883), सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक(1889) आदि की रचना की। 19 अक्टूबर 1882 को आपने हण्टर कमीशन के सम्मुख अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें शिक्षा के प्रत्येक आयाम व स्तर में सुधार हेतु अनेक सुझाव दिये।

ज्योतिराव फुले के सामाजिक व शैक्षिक सुधार कार्यक्रमों से प्रभावित होकर मुम्बई में एक भव्य समारोह में उन्हे 11 मई 1888 को 'महात्मा' की उपाधि दी गई।

28 नवम्बर 1890 ई0 को महात्मा ज्योतिराव फुले का लम्बी बिमारी के बाद निधन हो गया।

समस्या कथन–

उपरोक्त के अनुसार समस्या का प्रतिपादन निम्न शब्दों में किया गया है–

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. महात्मा ज्योतिराव फुले की पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना, जिसमें उनके विचारों का प्रादुर्भाव हुआ।
2. महात्मा ज्योतिराव फुले के दार्शनिक, सामाजिक, राजनैतिक विचारों का अध्ययन करना।
3. महात्मा ज्योतिराव फुले के शिक्षा के विभिन्न आयामों व स्तरों के सन्दर्भ में विचारों का अध्ययन करना।
4. महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का कुछ अनुवर्ती विचारकों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि–

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के आधार पर ऐतिहासिक एवं दार्शनिक शोधविधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक शोध विधि के प्रयोग का मूल उद्देश्य महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का विश्लेषण कर वर्तमान व भावी समाज के विकास के लिए उचित मार्ग प्रशस्त करना है तथा दार्शनिक शोध विधि

से ज्योतिराव फुले के बौद्धिक व तार्किक चिंतन का विश्लेषण करके नवीन मूल्यों एवं तथ्यों को प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया जायेगा।

आकडों के स्रोत–

प्रस्तुत शोध की प्रकृति दार्शनिक एवं समीक्षात्मक है। अतः अध्ययन हेतु गुणात्मक ऑकड़ो का प्रयोग किया जाएगा जिसमें विभिन्न पुस्तकें, व्यक्तियों के अनुभव, व्यक्तिगत डायरी तथा पत्र–पत्रिकाओं आदि को अध्ययन के स्रोत के रूप में शामिल किया जाना है। इस प्रकार से संकलित ऑकड़े प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत के रूप में सम्मिलित किये जाने हैं।

- **प्राथमिक स्रोत–**

ज्योतिराव फुले द्वारा लिखित मूल पुस्तके, लेख, भाषण, व्याख्यान, कथन, सम्बोधन, प्रतिवेदन आदि प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत सम्मिलित किये जायेंगे, जो निम्नवत् हैं–

❖ गुलाम गिरी	ज्योतिराव फुले
❖ शिवाजी का पँवाड़ा	ज्योतिराव फुले
❖ किसान का कोड़ा	ज्योतिराव फुले
❖ सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक	ज्योतिराव फुले
❖ इशारा	ज्योतिराव फुले
❖ ब्राह्मणों की चालाकी	ज्योतिराव फुले
❖ अखण्डादि काव्य रचना	ज्योतिराव फुले
❖ अछूतों की कैफियत	ज्योतिराव फुले
❖ तृतीय रत्न	ज्योतिराव फुले
❖ पँवाड़ा शिक्षा विभाग के ब्राह्मण अध्यापक का	ज्योतिराव फुले
❖ सत्सार	ज्योतिराव फुले
❖ 1882 हण्टर शिक्षा आयोग को दिया गया प्रतिवेदन	ज्योतिराव फुले

द्वितीयक स्रोत–

ज्योतिराव फुले के जीवन वृत्त, व्यक्तित्व, कृतित्व व विचारो पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तके, लेख शोधपत्र, सम्पादकीय आदि का अध्ययन द्वितीयक स्रोत के रूप में सम्मिलित किया जाना है जो निम्नवत् है–

❖ महात्मा ज्योतिराव फुले	कन्हैया लाल चंचरीक
❖ महात्मा ज्योतिराव फुले रचनावली भाग 1 व 2	डॉ0 एल. जी. मेश्राम
❖ फुले जीवनी (सचित्र)	डॉ0 एल. जी. मेश्राम
❖ दलित शिक्षा का परिदृश्य	डॉ0 कुसुम यदुलाल
❖ ज्योतिराव फुले की अमर कहानी	शांति स्वरूप बौद्ध
❖ समाजिक क्रांति के अग्रदूत महात्मा ज्योतिराव फुले	मुरलीधर जगताप
❖ समाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष	डॉ0 राम गोपाल सिंह
❖ भारत के सामाजिक क्रांतिकारी	देवेन्द्र कुमार वैसन्तरी
❖ ज्योतिपुंज महात्मा फुले	जियालाल आर्य
❖ हरिजन से दलित	राजकिशोर (सम्पादक)
❖ शोषित समाज के क्रांतिकारी प्रवर्तक	चरन सिंह भण्डारी
❖ दलित दस्तावेज	एम.आर. विद्रोही
❖ शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास	एस.के.पंजम
❖ शूद्र कौन थे?	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर

शोध के उद्देश्यों के अनुसार प्रयुक्त उपकरण एवं प्रक्रिया–

उद्देश्यों के अनुसार चयनित उपकरण व प्रक्रिया को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है–

क्र0सं0	उद्देश्य	उपकरण एवं शोध विधि
1.	महात्मा ज्योतिराव फुले की पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना	• महात्मा ज्योतिराव फुले के सम्बंध में विभिन्न स्रोतो से प्राप्त जानकारी व सूचनाओं का संग्रह। (द्वितीय अध्याय)
2.	महात्मा ज्योतिराव फुले के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।	• प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों तथा अध्ययन से सम्बंधित विभिन्न शोध कार्यो के अध्ययन द्वारा। (चतुर्थ अध्याय)
3.	महात्मा ज्योतिराव फुले के शिक्षा के विभिन्न आयामो व स्तरों के संदर्भ में विचारों का अध्ययन करना।	• प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों व अध्ययन से सम्बंधित विभिन्न शोध कार्यो के अध्ययन द्वारा। (पंचम अध्याय)
4.	महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का कुछ अनुवर्ती विचारकों (डॉ0 अम्बेडकर व महात्मा गाँधी) पर प्रभाव का अध्ययन।	• डॉ0 अम्बेडकर व महात्मा गाँधी से सम्बंधित पुस्तकों, लेखो आदि का अध्ययन करके उनके शैक्षिक विचारो से ज्योतिराव फुले के विचारो की तुलना कर प्रभाव का अध्ययन। (षष्ठम् अध्याय)
5.	आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन।	• वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य की समीक्षा हेतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली व शैक्षिक नीतियो से सम्बंधित पुस्तको व रिपोर्टो का अध्ययन। • ज्योतिराव फुले के शिक्षा के संदर्भ मे प्राप्त विचारों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन। (षष्ठम् अध्याय)

परिसीमन–

प्रस्तुत अध्ययन में महात्मा ज्योतिराव फुले के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा को प्रभावित करने वाले विचारों व कार्यो को ही सम्मिलित किया जायेगा।

अध्यायों का संगठन–

- **प्रथम अध्याय–**

इसके अन्तर्गत अध्ययन की पृष्ठभूमि, अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व, समस्या कथन, अध्ययन के उद्देश्य आंकड़ो के स्रोत, शोध विधि, परिसीमन व अध्यायों के संगठन को सम्मिलित किया जाना है।

- **द्वितीय अध्याय–**

इस अध्याय में महात्मा ज्योतिराव फुले के जीवन परिचय, उनकी शिक्षा, उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले प्रमुख व्यक्ति व घटनाये, सामाजिक कार्यकर्ता व समाज सुधारक के रूप में उनके द्वारा किये गये शैक्षिक व सामाजिक कार्यो को सम्मिलित किया जाएगा। इसमें ज्योतिराव फुले द्वारा लिखित पुस्तकों, प्रतिवेदनों आदि का भी उल्लेख किया जाएगा।

- **तृतीय अध्याय–**

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण में समस्या से सम्बन्धित पुस्तकों, लेखो, सम्पादकीय प्रतिवेदन, शोध पत्रों तथा पूर्व में हुये शोध कार्यो का विश्लेषण किया जायेगा।

- **चतुर्थ अध्याय–**

इस अध्याय में ज्योतिराव फुले के दार्शनिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दर्शन का उल्लेख कर उसके सूक्ष्म अन्वेषण का प्रयास किया जाएगा।

- **पंचम अध्याय–**

इसके अन्तर्गत शिक्षा के विभिन्न स्तरों एवं आयामो के सम्बंध में महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन किया जायेगा।

- **षष्ठम् अध्याय–**

इस अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक परिदृश्य को प्रभावित करने वाले महापुरूषों डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व महात्मा गाँधी के विचारों पर महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों के प्रभाव का अध्ययन करके आधुनिक परिपेक्ष्य में ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाना है।

सप्तम् अध्याय–

इसके अन्तर्गत शोध सारांश, शोध प्राप्तियाँ, निष्कर्ष एवं सुझावों की सम्मिलित किया जायेगा।

शोध प्राप्तियाँ–

प्रस्तुत शोध से सम्बंधित निम्नलिखित शोध प्राप्तियाँ ज्ञात हुयी–

1. ज्योतिराव का दर्शन मानवतावादी था।
2. महात्मा ज्योतिराव फुले ने निःशुल्क व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की जिसका स्वरूप मौलिक व व्यवहारिक हो।
3. महात्मा ज्योतिरव फुले के शैक्षिक विचारों का आधार स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व, नैतिकता व मानवता है अतः उनके शिक्षा के उद्देश्य भी इन्ही मूल्यों के विकास से सम्बंधित है।
4. ज्योतिराव फुले ने शिक्षा द्वारा छात्रों में आदर्श व मूल्यों के विकास पर बल दिया है। वह नैतिक शिक्षा को पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते है।
5. महात्मा ज्योतिराव फुले दण्डात्मक अनुशासन का विरोध करते थे उनके अनुशासन का स्वरूप 'स्व' व 'आत्मप्रेरित' है।

6. ज्योतिराव फुले ने कृषि शिक्षा हेतु विशेष रूपरेखा तैयार की है तथा उसे मूल शिक्षा से जोड़ने पर बल दिया जिससे कृषक वर्ग कृषि की नवीन तकनीकियों व प्रणालियों को सीखकर अपनी स्थिति में सुधार कर सके।
7. महात्मा ज्योतिराव फुले ने शिक्षक प्रशिक्षण व विद्यालय निरीक्षण को महत्वपूर्ण माना है जिससे शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार किया जा सके।
8. उनके शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है।
9. ज्योतिराव फुले बुद्धिप्रमाणवाद में विश्वास करते थे उनका ईश्वर तथा धर्म सम्बंधी दृष्टिकोण तर्क व वैज्ञानिकता पर आधारित था।
10. डा0 भीमराव अम्बेडकर महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। डा0 अम्बेडकर ने उनके अस्पृश्यता उन्मूलन व सामाजिक सामानता की स्थापना के आन्दोलन को विस्तार दिया।
11. महात्मा ज्योतिराव फुले व महात्मा गाँधी के चिंतन में अनेक समानतायें हैं जैसे रोजगारपरक शिक्षा, नैतिकता का विकास व सामाजिक असमानता का विरोध।
12. महात्मा ज्योतिराव फुले व डा0 भीमराव अम्बेडकर ने शूद्रों व महिलाओं की दयनीय स्थिति के लिये हिन्दू धमशास्त्रों जिम्मेदार ठहराया है जबकि महात्मा गाँधी का मत इस संदर्भ में भिन्न है।

निष्कर्ष–

ज्योतिराव फुले ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी साधन बनाकर धर्मग्रन्थ, वर्ण व जाति व्यवस्था, नारी–दासता, मूलभूत शोषण की व्यवस्था के विरूद्ध अपने विचार प्रस्तुत किये। फुले ने अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के अनुरूप स्वतंत्रता, समानता, व न्याय पर आधारित एक सुनियोजित शिक्षा योजना समाज के समक्ष प्रस्तुत की तथा उसको अपने संघर्षों व प्रयासों द्वारा क्रियान्वित भी किया।

ज्योतिराव फुले के विचार मानवता, तर्क व वैज्ञानिकता पर आधारित है जो समस्त स्थान, काल व परिस्थितियों में प्रासंगिक है। वह ऐसे रचनात्मक समाज की संरचना के पक्षधर थे जिसमें द्वेष, वर्ग–संघर्ष, धार्मिक उन्माद, शोषण और अत्याचार

का कोई स्थान न हो वरन् सर्वत्र समानता, प्रेम, बंधुत्व नैतिकता व मानव गरिमा जैसे मूल्यों की स्थापना हो।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महात्मा ज्योतिराव फुले का चिंतन वर्तमान शिक्षा एवं उसकी व्यवस्था हेतु प्रासंगिक है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जहाँ शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षा के माध्यम, शिक्षा की भूमिका एवं संकल्पना में नित नये परिवर्तन हो रहे हैं महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक एवं सामाजिक विचार इन परिवर्तनो को उचित दिशा एवं दशा प्रदान कर सकते हैं।

सुझाव–

- **समाज हेतु सुझाव–**

1. आधुनिक प्रगतिशील समाज में अनेक विषमताएं व्याप्त हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक एवं सामाजिक दर्शन से यदि सहायता ली जाए तो इन विषमताओं का निराकरण किया जा सकता है।
2. मानवतावादी चिंतन की अभिकल्पना के अनुसार भारतीय समाज स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, मानव गरिमा व न्याय की भावना पर आधारित होना चाहिए। इस दृष्टि से समाज पुर्नरचना में महात्मा ज्योतिराव फुले का चिंतन समाज को प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

- **सरकार हेतु सुझाव–**

1. सरकार अपने सर्वशिक्षा अभियान जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों को ज्योतिराव फुले के शैक्षिक दर्शन से प्रेरणा लेकर नयी दिशा प्रदान कर सकती है।
2. सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में उनके विचारों से उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सकती है क्योकि ज्योतिराव फुले ने शिक्षा के समस्त आयामों पर अत्यंत तर्कपूर्ण व प्रगतिशील विचार प्रस्तुत किये हैं।

- **शैक्षिक संस्थाओं एवं शिक्षाविदों हेतु सुझाव–**

1. शिक्षक व शैक्षिक संस्थाओ द्वारा महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का विश्लेषण करने व समाज में उनकी उपयोगिता सिद्ध करने के सन्दर्भ में कार्यशाला व संगोष्ठी का आयोजन किया जा सकता है।
2. शैक्षिक संस्थाएं महात्मा ज्योतिराव फुले के साहित्य से अपने पुस्तकालय को समृद्ध कर सकती हैं।

- **भावी शोधार्थियों हेतु सुझाव–**

प्रत्येक शोध अध्ययन के पश्चात् बहुत से ऐसे तथ्य, विचार व शोध समस्याएं निकलकर आती हैं जो शोधार्थियों को भविष्य में नवीन शोध कार्यो हेतु दिशा निर्देश प्रदान करती हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से भावी शोधार्थियों को समस्या चयन व उनके क्रियान्वन हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है–

1. महात्मा ज्योतिराव फुले का अन्य समकालीन विचारकों के साथ शैक्षिक व सामाजिक संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।
2. महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक, सामाजिक विचारो व कार्यो का डॉ0 भीमराव अम्बेडकर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. महात्मा ज्योतिराव फुले के स्त्री शिक्षा सम्बंधी विचारों की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
4. महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक व सामाजिक विचारों का अन्य आधुनिक विचारकों के कार्यो एवं विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सामाजिक परिवर्तन की दिशा निर्धारण के सन्दर्भ में महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

संदर्भ ग्रन्थ

इसके अन्तर्गत अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न ग्रन्थों, पुस्तकों, लेखों, पत्रिकाओं वेब सन्दर्भ सूची का क्रमबद्ध उल्लेख किया गया है।